डॉ मधुकर श्री. इसमन्नीस
एम. ए. पीएच. डी.
रीडर तथा विभागाध्यक्ष,
वि. ना. महाविद्यालय, शिराला

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि कु. पुष्पा गणपतराव लोखंडे ने मेरे निर्देशन में यह शोध-प्रबंध एम्. फिल. उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजनानुसार यह कार्य संपन्न हुआ है। जो तथ्य इस प्रबंध में प्रस्तुत किये है मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

स्थान : कोल्हापुर
दिनांक :30 नवम्बर १९९३

निर्देशक

(डॉ. एम. एस इसमन्नीस)

30-11-93

Reader and Head
Department of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur - 416004

प्रतिज्ञापन

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम. फिल, के लघु-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर

दिनांक : ३० नवम्बर १९९३

शोधछात्रा

(कु. पुष्पा गणपतराव लोखंडे)

नाटककार

डॉ. शंकर शेष

जन्म : २ अक्तूबर १९३३ मृत्यु : २८ अक्तूबर १९८१

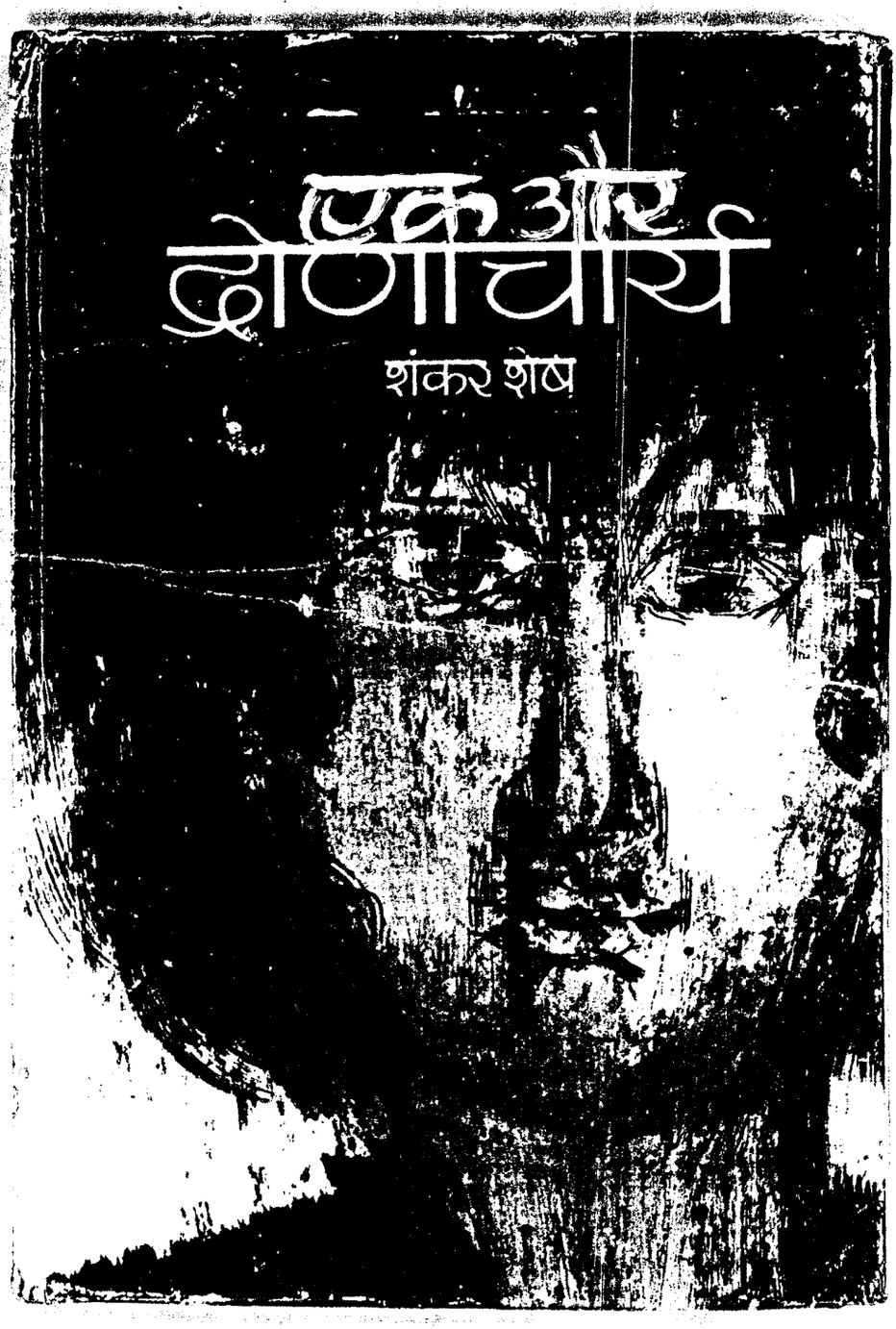
एक और
द्रोणाचार्य
शंकर शेष

ऋण - निर्देश

मैं भाग्यशाली हूँ, जिसे शिक्षा की पहली कक्षा से पदव्युत्तर दिशाओं तक जो गुरुजन मिले वे संत कबीर दास जी के शब्दों मे सद्गुरु रहे है। कबीर दास जी कहते हैं -

सतगुरु की महिमा अनंत अनंत किया उपगार
लोचन अनंत उघारिया अनंत दिखावण हार

मेरे गुरुजनों ने अपने चारों-ओर के जीवन की उजागरता से देखने की ज्ञान दृष्टि मुझे प्रदान की। उन सभी के चरणों मे प्रणिपात !

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले, समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित करनेवाले मेरे श्रध्देय गुरुजनो, हितचिंतको, आत्मिय मित्रों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मै अपना आद्य कर्तव्य मानती हूँ।

मैंने यह लघु प्रबंध लिखने का जो संकल्प किया था, उसकी प्रेरणा श्रध्देय गुरुवर डॉ. मधुकर हसमनीस जी की सहायता के बिना कभी नहीं हो सकती है। मेरा यह लघु-शोध-प्रबंध डॉ. हसमनीस के सूक्ष्म निरीक्षण एवं निर्देशन का परिणाम है। इस लघु-शोध-प्रबंध के विषय चुनाव से लेकर अन्त तक उन्होंने मुझे अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये। सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद अपने लघु-शोध-प्रबंध का प्रत्येक अध्याय देखा और मुझे निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की । प्रस्तुत शोध-प्रबंध हर समय बड़ी तत्परता और तन्मयता से मौलिक, कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है। इन ऋणो के प्रतिपादन में आभार या धन्यवाद जैसे शब्दों से ऋण मुक्त की कल्पना धृष्टता होगी। गुरुवर के पुनीत चरनों मे नतमस्तक होने के आलावा मैं क्या कर सकती हूँ ? भविष्य मे उनकी ऋणी होने मे ही मुझे संतोष मिलेगा। इसी स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद की मै निरन्तर अभिलाषी रहूंगी। गुरुवर डॉ. हसमनीस की धर्मपत्नी सौ. आशा हसमनीस का प्रोत्साहन मेरे लिए उत्साह वर्धन मे सहायक सिध्द हुआ है। उनके प्रति आभार प्रकट करना भी मेरा दायित्व है।

आदरणीय गुरुवर शिवाजी विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ. वसंत केशव मोरे जी नें बार-बार यह कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उनकी भी मै ऋणी हूँ।

बाळासाहेब देसाई कॉलेज, पाटण के हिन्दी विभागाध्यक्ष गुरुवर डॉ. संपतराव जाधव जी का अमूल्य योगदान मेरे इस कार्य में मिला है। उन्हों ने मेरे अनुसंधान कार्य में समय पर प्रत्यक्ष अनेक प्रकार की मौलिक सुचनाएं दी, उपयोगी किताबें देकर मेरी सहायता की। जिसके कारण इतस्तत भटकनेवाला मेरा मन स्थिर हो चुका। डॉ. जाधव जी की कृपा के बिना इस लघु-शोध-प्रबंध का कार्य संपन्न होने में जरुर कठिनाइयाँ आती। मैं उनकी हृदयपूर्वक आभारी हूँ। आपके स्नेह एवं आशीर्वाद के बंधन मे बंधे रहने मे ही मै अपनी धन्यता तथा सौभाग्य मानूंगी।

नाटककार शेष पर सबसे प्रथम लिखनेवाले मेरे गुरुजन डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी की किताब से यह कार्य संपन्न हो चुका। डॉ. जी. एस. पाखले, डॉ. गो. रा. कुलकर्णी जैसे आदरणीय गुरुवर ने प्रत्यक्ष 'मिशक' विषयपर लिखने के लिए नयी दिशा प्रदान की। इन सभी की मै ऋणी हूँ।

मेरे गुरुजन डॉ. द्रविड, डॉ. शहा, डॉ. चव्हाण, डॉ. पाटील, प्रा. मिस् रजनी भागवत, प्रा. लिबले, प्रा. वेदपाठक, प्रा. हिरेमठ इन सभी का आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा। उनके प्रति मै सविनय आभार प्रकट करती हूँ।

जिस कॉलेज मे सेवारत हूँ, उस वराडकर - बेलोसे कॉलेज, दापोली के प्राचार्य शिवाजी पाटील तथा मेरे सभी सहयोगी प्राध्यापक, संस्था के पदाधिकारी, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग देकर मेरे इस काम में जिन्होंने मदत की उन सभी की मैं आभारी हूँ।

बम्बई के श्री सुनील मुरुडकर इनकी सहायता से मुझे यह नाटक देखने का सौभाग्य मिला। इन की मैं हार्दिक आभारी हूँ।

मेरे इस कार्य में निम्नांकित ग्रंथालयों ने मुझे अच्छा सहयोग दिया। ग्रंथालय शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर, राजाराम कॉलेज कोल्हापुर, के. बी. पी. कॉलेज इस्लामपुर, डी. बी. जे. कॉलेज चिपलून, बी. डी. कॉलेज पाटण, न्यू कॉलेज कोल्हापुर, वि. ना. महाविद्यालय शिराळा, वराडकर - बेलोसे कॉलेज दापोली। इन सभी ग्रंथपालों ने मेरे जो कष्ट उठाए उनकी भी मै ऋणी हूँ।

मेरे भैया चि. संजय रविंद्र पाटील ने इस कार्य सिध्दी के लिए मेरी घर के अंदर-बाहर दौड़ धूपकर मुझे अध्ययन, लेखन, तथा टंकलेखन मे जो मदद की उसके लिए मै उसकी ऋणी हूँ।

आदरणीय श्री जालिन्दर रामचंद्र राजमाने, श्री. विलास मारुती पाटील और मेरे मानस भैया प्रा. भारत खिलारे इन्होंने मुझे इस कार्य मे अच्छा सहयोग देकर बार-बार प्रोत्साहित किया। इन सभी का मै आभार प्रकट करती हूँ।

विशेशत: मेरे चाचाजी शिवाजी लोखंडे और दादाजी शामराव लोखंडे की प्रेरणा मुझे इस कार्य मे मिली। मेरी बहनें सौ. प्रतिभा और पौर्णिमा की भी सहायता मिली। मेरे पूज्य पिताजी श्री गणपतराव लोखंडे और माताजी सौ. रत्ना लोखंडे जी का आशीर्वाद के बिना यह कार्य असंभव था। उनकी दुवां से ही मै यह कार्य पूरा कर सकती।

पिताजी के नाते श्री रविंद्र पाटीलनेआर्थिक सहायता प्रदान करके मुझे चिन्ता मुक्त किया। मै निरन्तर उनके आशीर्वाद की छव छायामे रहने की कामना करती हूँ।

यह लघु-शोध-प्रबंध टंकलिखित करने का बडा महत्वपूर्ण कार्य श्री. आर. एस. पाटील, बोरगांव और उनके सहकारी श्री. डी. एम. मोरे इन्हों ने तन्मयता से पूरा किया इसलिए मै उनकी हार्दिक आभारी हूँ।

यु. जी. सी. का मै आभार मानती हूँ। जिसने छात्रवृत्ति के रुप में आर्थिक सहायता प्रदान करके मुझे चिन्तामुक्त किया। सभी विद्वानों, समीक्षकों, गुरुजनों और मित्र परिवार के प्रति मै आभार प्रकट करती हूँ, जिनकी सहायतासे मै यह शुभ कार्य पूरा कर सकी।

कोल्हापुर
दि.३० नवम्बर १९९३

शोध छात्रा
कु. पुष्पा गणपतराव लोखंडे

प्रस्तावना

डॉ. शेष अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय हिन्दी जगत को करा ही रहे थे। उनके आकस्मित निधन ने सारी संभावनाओं पर पानी फेर दिया। 'खजुराहों का शिल्पी' नाटक विषय कथ्य भाषाशैली से लोगों को चमत्कृत कर चुका था। फिल्म 'घरौंदा' के यश ने उनका नाम घर-घर तक पहुंचा था। 'फंदी', 'एक और द्रोणाचार्य' तथा 'रक्तबीज' जैसी कृतियों अपने कथ्य और शिल्प के कारण आलोचकों तथा रंगमंच प्रस्तुतो और निर्देशकों का ध्यान आकृष्ट रहा था। इनके विषयो और शिल्पशैलीयों का वैविध्य डॉ. शेष की सृजनात्मक विलक्षणता तथा नये संभावनाओ का संकेत दे रहे थे। उनका महभारतीय कथाओंपर आधारित आलोचकों का ध्यान आकृष्ट कर रहा था। इन सभी बातो ने मुझे डॉ. शेष साहित्य सृजन संबधी अनुसन्धान कार्य की ओर प्रेरित किया। डॉ. शेष की अनेक रचनाएं विश्वविद्यालयों में पाठ्य क्रम में आने लगी है।

संयोगवश 'एक और द्रोणाटचार्य' नाटक एम. ए. की पढ़ाई के दौरान पढ़ लिया और बार-बार पढ़ा। डॉ. शेष आज की भ्रष्ट शिक्षा प्रणाली से बेचैन थे, उन्होंने प्रत्यक्ष इन बातों का अनुभव अपनी शिक्षक की नौकरी में लिया था। आज की भ्रष्ट संस्थाएं, परीक्षा में चली काफी जैसे अनीति की बातें, संस्था द्वारा लाचर बने शिक्षक उन्होने अपनी आँखोंसे देखा था। इन सारी बातों को उन्होने 'एक और द्रोणाचार्य' में प्रस्फुटित किया है। अत: बीज के रुप में डॉ. शेष जी नें मेरे मस्तिष्क मे स्थान ले लिया। जब एम. फिल. के लघु-शोध-प्रबंध के विषय चुनाव का अवसर आया। तब बीजरुपी शेष मन मे कुलबुलाने लगा और परिणाम स्वरुप नाटककार शंकर शेष जी का ' एक और द्रोणाचार्य' पर लघु-शोध-प्रबंध सृजन कार्य आरंभ हुआ। मैंने इस विषय को अपने श्रध्देय गुरुवर डॉ. मधुकर हसमनीस जी के सम्मुख रखा, तो उन्होंने तुरन्त हामी भर दी।

नाटककार शंकर शेष के साहित्य पर विविध प्रकार की समीक्षाएं, विवेचनाएं एवं शोध प्रबंध के रुप में अनुसंधान कार्य संपन्न हो चुका है। 'नाटककार शंकर शेष' - डॉ. सुनीलकुमार लवटे, 'डॉ. शंकर शेष के नाटको का अनुशीलन' - डॉ. मधुकर हसमनीस, डॉ. शंकर शेष के साहित्यिक विषयों और शिल्प विधियों का अनुशीलन' डॉ. संपतराव जाधव, 'नाटककार शंकर शेष' डॉ. विनय, 'रंगधर्मी नाटककार शंकर शेष' - डॉ. प्रकाश जाधव, ये सब शेष के बारे में जानकारी देनेवाले महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

इन सारे ग्रथों में 'एक और द्रोणाचार्य' पर पूरा विवेचन मुझे नही मिला इसलिए मैंने इस नाटक का पूरा समीक्षात्मक अध्ययन करने का निश्चय किया। यह लघु-प्रबंध मेंरी दृष्टि से 'एक और द्रोणाचार्य' पर इतने विस्तार में लिखा। शायद मेरा ही प्रयत्न हो।

'एक और द्रोणाचार्य' में आज के लाचार आध्यापकों को, भ्रष्ट संस्थाओं की पोल खोली है, याने यह नाटक आज तक की शिक्षक की लाचारी की परंपरा पर प्रकाश डालता है। मै भी शिक्षा क्षेत्र में हूँ। मुझे भी कई अनुभव मिले और कई बाते मैंने देखी। इस वजह से प्रस्तुत नाटक ने मुझे आधिक आकर्षित किया। इसलिए उसका समीक्षात्मक अध्ययन करने का निश्चय मैंने किया।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध निम्नांकित चार अध्याय में विभाजित है -

अध्याय : पहला

पहले अध्याय में शेष व्यक्तित्व - कृतित्व पर संक्षेप मे विचार किया है। इस अध्याय में नाटककार शेष के जन्म से लेकर मृत्यु तक का जीवनक्रम संक्षिप्त विवरण में प्रस्तुत किया है। कृतित्व के अन्तर्गत मैंने २० रचनाओं से लेकर तथा अप्रकाशित 'बेटों-वाला बाप', ' त्रिकोण का चौथा कोण' नाटककों का संक्षेप में परिचय दिया है। अत: डॉ. शेष की जीवन दृष्टि का परिचय पाने के हेतु प्रथम अध्याय में जीवन परिचय प्रस्तुत किया है।

अध्याय : दूसरा

डॉ. शेष की प्रतिभाने जीवन के सभी क्षेत्रों का स्पर्श किया है। धर्म, समाज, संस्थाएँ, संघर्ष, राजनीति, शिक्षाक्षेत्र, आर्थिक समस्याएं, मानव जीवन के चिरन्तन मूल्य, मिथक, इतिहास के विवादास्पद रहस्य गुंठित ऐसे अनेक सूत्र लेकर डॉ. शेष अपना साहित्य सृजन करते रहें। 'एक और द्रोणाचार्य' के माध्यम से उन्होंने शिक्षा क्षेत्र की अच्छाई - बुराई का अनुशीलन किया है। इसके विषय की मौलिकता और वर्तमान युग में महसूस की जानेवाली आवश्यकता के कारण तथा प्रायोगिक नवीनता के कारण यह कृति भी, बहुचर्चित रह चुकी है। द्वितीय अध्याय में 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक की तात्विक दृष्टि से समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

अध्याय : तीसरा

'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में डॉ. शंकर शेष ने एक प्राचीन कथाबीज को लेकर उसे आधुनिक संदर्भ को जोड़नेका अनूठा प्रयास किया है। पौराणिक मिथक के माध्यम से आज की शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। और समकालीन अनेक समस्याओं को बहुत बारिकियों से उजागर किया है। अत: तीसरे अध्याय के अन्तर्गत 'एक और द्रोणाचार्य की मिथकीयता' के बारे मे विवेचन प्रस्तुत किया है।

अध्याय : चौथा

नाट्य - शास्त्रिय दृष्टि से नाटक का साहित्य कृति के रुप मे मुल्यांकन करते समय जिन तत्वों का आधार ग्रहण किया जाता है, उन्हीं तत्वों का प्रायोगिक स्तर पर प्रभाव पड़ता है। प्रयोगधर्मिता, संस्कृत नाट्य परंपरा से लेकर लोकनाट्यात्मक शिल्प, शैलियों तक तथा नाटक, ध्वनि, रुपक दूरदर्शन, चलचित्र तक की अत्याधुनिक शिल्प - शैलियों डॉ. शेष के प्रतिभा ने सफल संचार किया है। प्रस्तुत नाटक प्रायोगिक नवीनता के कारण अपना अलग महत्व प्राप्त करता है। अत: डॉ. शंकर शेष की रचना 'एक और द्रोणाचार्य की प्रायोगिकता' के संबन्ध में नाटक के आधुनिक तात्विक आधारों के साथ चौथे अध्याय के अन्तर्गत किया गया है।

अध्याय : पाँचवां

उनके इस नाटक में, कथ्य, शिल्प, शैली, रंगमंच की दृष्टि से जो नयापन है उसका विवेचन 'उपसंहार' अध्याय में मैंने किया है। प्रारंभ से चौथे अध्याय तक किये गये अनुसंधान के बाद जो तथ्या हाथ मे लगे उन्हे उपसंहार में देनेका प्रयास किया है। इस दृष्टि से प्राप्त अनेक लेखकों तथा उपलब्ध आलोचको के मतों को भी आधार ग्रहण किया है। साठोत्तरी नाट्यसाहित्य में तो विषय, कथ्य तथा शिल्पगत प्रयोगधर्मिता के कारण डॉ. नाटककार शेष अपना निश्चित स्थान निर्माण कर चुके है।

नाटककार शंकर शेष के ' एक और द्रोणाटचार्य' का समीक्षात्मक अध्ययन मैंने प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में किया है।

-!-!-

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

पहला अध्याय : डॉ. शंकर शेष : जीवनी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1-20

१. जीवनी : जन्मस्थल, परिवार, बचपन, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, व्यवसाय, शरीर, आदतें, मृत्यु.

२. व्यक्तित्व : महान व्यक्तित्व, चारित्र्यसंपन्न, विनम्र, पुस्तकप्रेमी, चिंतनशील व्यक्तित्व, श्रेष्ठ प्रशासक, आदर्श अध्यापक, मिलनसार व्यक्तित्व, आत्मसुधारकी भावना, हँसोड व्यक्तित्व, अच्छावक्ता, आशावादी, प्रसिध्दि विन्मुख.

३. कृतित्व : १) नाटक ---
मूर्तिकार, नई सभ्यता के नये नमूने, रत्नगर्भा, बेटोंवाला बाप, तिलका ताड, बिनबाती के दीप, बाढ का पानी, बंधन अपने अपने, खजुराहो का शिल्पी, फंदी, एक और द्रोणाचार्य, कालजयी, घरौंदा (अनिकेत), अरे! मायावी सरोवर, रक्तबीज, पोस्टर, राक्षस, चेहरे, कोमलगांधार, आधी रात के बाद, त्रिकोण का चौथा कोण

२) एकांकी ---
विवाह मंडप, हिंदी का भूत, त्रिभुज का चौथा कोण, एक प्याला काफी था, पुलिया, अजायब घर.

३) बालनाटक ---
बिमार का इलाज, मिठाई की चोरी

४) अनूदित नाटक ---
दूर के दीप, पंचतंत्र, और एक गार्बो, चल मेरे कद्दू धुम्मक धुम्म.

५) उपन्यास ---
तेंदू के पत्ते, चेतना, धर्मक्षेत्रे, कुरूक्षेत्रे.

६) पटकथा ---
घरौंदा, दूरियाँ, सोलहवाँ सावन.

७) अनुसंधान ---
मराठी हिंदी कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, छत्तीसगढ़ी भाषा का शास्त्रीय अध्ययन, आदिम जाति शब्दसंग्रह एवं भाषा शास्त्रीय अध्ययन.

दूसरा अध्याय : **एक और द्रोणाचार्य की तात्विक समीक्षा** 20-60

१. भूमिका

२. कथावस्तु : पूर्वार्ध्द, उत्तरार्ध्द, कथावस्तु की समीक्षा, कथावस्तु की विशेषता, कथावस्तु में समानांतरता.

३. पात्र और चरित्र-चित्रण : वर्तमान कालीन पात्र : प्रत्यक्ष पात्र अरविंद, लीला, अनुराधा, विमलेन्दु, प्रेसिडेण्ट, प्रिन्सिपल, चंदू, यदू,
पहली आवाज : सरकारी वकील,
दूसरी आवाज : न्यायाधीश,
तीसरी आवाज : अरविंद का वकील.

अप्रत्यक्ष पात्र :
महाभारत कालीन कथा के पात्र : प्रत्यक्ष पात्र
द्रोणाचार्य, कृपी, अश्वत्थामा, एकलव्य,
अर्जुन, भीष्म, युधिष्ठिर.

चरित्र-चित्रण में समानांतरता :
अरविंद और द्रोणाचार्य, लीला और कृपी,
अनुराधा और द्रौपदी.

४. कथोपकथन
५. देश-काल और वातावरण :
स्थान की एकता, कार्य की एकता, काल की एकता.
६. भाषाशैली : व्यंग्यपूर्ण भाषा, मुहावरों का प्रयोग, कहावतें,
सूक्तियों का प्रयोग, नई भाषा का प्रयोग,
उर्दू-अरबी-फारसी शब्द, तद्भव शब्द, अँग्रेजी शब्द,
अंग्रेजी वाक्य, ग्राम्यता या मराठीपन, अश्लीलता,
पुनरावृत्तिगत दोष, भाषा की पात्रानुकूलता, अधूरे
वाक्यों की योजना, अलंकार योजना.
७. उद्देश्य
८. शीर्षक की सार्थकता

तीसरा अध्याय : एक और द्रोणाचार्य की मिथकीयता 61-68
१. डॉ. शंकर शेष के नाटकों में मिथकीयता
२. मिथक का स्वरूप
३. मिथक की परिभाषाएँ
४. मिथक : अर्थबोध और अर्थविस्तार
५. मिथक की अवधारणा
६. मिथक की विशेषताएँ

चौथा अध्याय : एक और द्रोणाचार्य की प्रायोगिकता 69 – 84
१. भूमिका
२. प्रायोगिकता
३. कथावस्तु
४. पात्र
५. कथोपकथन
६. देश-काल और वातावरण
७. भाषाशैली : पात्रों के अनुकूल भाषा में स्वाभाविकता,
भावों की अनुकूल भाषा, भाषा में कौतूहलता.
८. रंगमंच योजना : दृश्य योजना, प्रकाश योजना, ध्वनी योजना
अ) अंधकार ध्वनि योजना
ब) प्रकाश ध्वनि योजना
९. अभिनेयता :
१०. मिथकीय शीर्षक :
११. नाटक की मंचन क्षमता एवं समीक्षकीय संवेदना

पाँचवाँ अध्याय : उपसंहार 85-93
परिशिष्ट : १. संदर्भ ग्रंथ सूचि
२. डॉ. शंकर शेष के नाटक
३. नाटकों का प्राप्त विविध पुरस्कार
४. एक और द्रोणाचार्य का मंचन